हमारे लिए यीशु का महत्व अत्यंत महान है, जैसा कि हम 4:13 में पढ़ते हैं:

“जब तक कि हम सब के सब विश्वास की एकता और परमेश्वर के पुत्र
की पहचान में एक न हो जाएँ और एक सिद्ध मनुष्य न बन जाएँ, और मसीह की पूर्णता के डील-डौल तक न पहुँच जाएँ।” (इफिसियों
4:13)

शालोम! हमारे प्रभु का नाम धन्य हो। आइए फिर से परमेश्वर के वचन का अध्ययन करें, जो हमारे पैरों के लिए दीपक और हमारे मार्ग के लिए उजियाला है, जैसा कि 119:105 में लिखा है:

“तेरा वचन मेरे पांव के लिये दीपक, और मेरे मार्ग के लिये उजियाला है।”

आत्मिक मनुष्य कौन है?

जैसा कि हम पहले भी सीख चुके हैं, आत्मिक मनुष्य वह नहीं है जो जादूगरों या दुष्टात्माओं को देख सकता है, जैसा कि बहुत से लोग

समझते हैं। जब एम्माऊस जाने वाले दो व्यक्तियों की आत्मिक आँखें खुलीं, तो उन्होंने न तो जादूगरों को देखा और न दुष्टात्माओं को — बल्कि उन्होंने यीशु को देखा (देखें 24:13–33)।

इसलिए आत्मिक मनुष्य वह है जो पवित्रशास्त्र में और अपने जीवन में यीशु मसीह को देख और पहचान सकता है। जिसकी आत्मिक आँखें खुल चुकी हैं, वह परमेश्वर के पुत्र को गहराई से जानता है—उसके पृथ्वी पर आने का उद्देश्य, उसकी सामर्थ्य, उसका वर्तमान स्थान, और पवित्रशास्त्र में उसका स्थान। ऐसा व्यक्ति अंततः उसका आदर करता है और अपना जीवन पवित्र और अलग रखता है।

यदि कोई यीशु मसीह को नहीं समझता, तो चाहे उसे कितने भी दर्शन होते हों, या उसके पास कितना भी धार्मिक ज्ञान हो, वह आत्मिक रूप से मृत है। क्योंकि परमेश्वर को जानने का केंद्र बिंदु स्वयं यीशु मसीह हैं।

2:9 कहता है:

“क्योंकि उसी में ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता देह में वास करती है।”

इसी कारण 4:13 फिर हमें याद दिलाता है कि हमें “परमेश्वर के पुत्र की पहचान” तक पहुँचना है।

हमारी शिक्षा, हमारे विचार और हमारा जीवन—सबका केंद्र यीशु मसीह होना चाहिए।

स्तुति से पहले पहचान

बहुत से लोग सोचते हैं कि यीशु को हमारी स्तुति की आवश्यकता है, चाहे हम उन्हें जानें या न जानें। परंतु सत्य यह है कि पहले हमें उन्हें जानना चाहिए, तभी हमारी स्तुति का अर्थ होगा।

जैसे यदि कोई अनजान व्यक्ति अचानक आकर आपकी प्रशंसा करे, तो आपको संदेह होगा। परंतु यदि आपका अपना भाई या बहन आपकी प्रशंसा करे, जो आपको भली-भांति जानता हो, तो उसकी प्रशंसा आपके लिए मूल्यवान होगी।

इसी प्रकार यदि हमारी स्तुति यीशु के सच्चे ज्ञान के बिना है, तो वह केवल बाहरी उत्साह है, जिसमें आत्मिक शक्ति नहीं होती।

दूसरे आदम — यीशु मसीह

जब परमेश्वर ने आदम को बनाया, तो उसे पृथ्वी पर अधिकार दिया। परंतु जब आदम और हव्वा ने पाप किया, तो वह अधिकार शैतान को चला गया।

मनुष्य विनाश के योग्य हो गया। परंतु परमेश्वर की दया से उद्धार का मार्ग बनाया गया। चूँकि मनुष्य के द्वारा पतन हुआ था, इसलिए मनुष्य के द्वारा ही उद्धार होना था।

इसलिए परमेश्वर ने “दूसरे आदम” को भेजा — अर्थात यीशु मसीह। वे पूर्ण और निष्पाप थे। वे पूर्ण मनुष्य थे, परंतु उनमें एक महान भेद था — वे देह में प्रकट हुए परमेश्वर थे।

3:16 कहता है:

“निस्संदेह भक्ति का भेद महान है: वह जो देह में प्रगट
हुआ…”

यीशु ने हमें, जो दंड के योग्य थे, अपनाया और अपने परिवार का हिस्सा बनाया।

यीशु का अधिकार

28:18 में लिखा है:

“यीशु ने उनके पास आकर कहा, ‘मुझे स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार दिया गया है।’”

वर्तमान समय अनुग्रह का समय है। परंतु यह सदा नहीं रहेगा। 13:23–27 हमें चेतावनी देता है कि एक समय द्वार बंद हो जाएगा।

अनुग्रह का अद्भुत वरदान

2:9–10 कहता है:

“पर तुम एक चुना हुआ वंश, और राजकीय याजक, और पवित्र जाति, और परमेश्वर की निज प्रजा हो…”

क्या यह अनुग्रह अद्भुत नहीं है? जो लोग पहले अंधकार में थे, अब

प्रकाश में बुलाए गए हैं।

आज निर्णय का दिन है

यीशु अभी अनुग्रह से बुला रहे हैं। परंतु एक दिन वे महिमा में आएँगे। उस दिन जिन्होंने उन्हें अस्वीकार किया, वे विलाप करेंगे।

यदि आपने अब तक उन्हें साधारण मनुष्य समझा है, तो आज अपना विचार बदल दीजिए। वे स्वर्ग में विराजमान हैं और अपने राज्य की स्थापना के लिए आने वाले हैं।

उद्धार आज है, कल नहीं। यदि आप पश्चाताप करना चाहते हैं, तो अकेले में जाकर घुटनों पर बैठिए, अपने पापों को स्वीकार कीजिए। वे क्षमा करेंगे।

सच्चा पश्चाताप जीवन में परिवर्तन लाता है। पापमय जीवन छोड़ दीजिए। फिर बपतिस्मा ग्रहण कीजिए—जैसा कि 3:23 और 2:38 में लिखा है।

तब परमेश्वर आपको पवित्र आत्मा की सामर्थ्य देंगे और आप नए जीवन में चल सकेंगे।

□□□□□ □□□□: □□□□ □□□□□ □□□□ □□, □□ □□ □□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□

□□□□□ □□□□ □□□□ □□□ □

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP....

Share on:
WhatsApp